दूसरी हरित क्रांति के लिए

कृषि क्षेत्र में सहयोग

फोटो: क्रिस्टोफर वर्स्त

अमेरिका और भारत अगले तीन साल में धन, मानवशक्ति, विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी के जरिये दूसरी हरित क्रांति लाने पर काम कर रहे हैं जो भारतीय कृषि उत्पादन में इजाफा करने के साथ-साथ उसका विविधीकरण भी करेगी।

इस पहल को अमेरिका-भारत कृषि ज्ञान पहल का नाम दिया गया है। इसके तहत 10 करोड़ डॉलर खर्च किए जाएंगे और दोनों देशों के विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों और व्यवसायों को इस व्यावहारिक तरीके से जोड़ा जाएगा कि कृषि शिक्षा, संयुक्त शोध और क्षमता में बढ़ोतरी करने वाली परियोजनाओं को मदद मिले। यह पहल राष्ट्रपति जॉर्ज बुश और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा 2 मार्च को घोषित संयुक्त वक्तव्य का अहम हिस्सा थी। प्रधानमंत्री सिंह ने कहा, ''हमारी पहली हरित क्रांति (1960 के दशक में) में अमरिकी मदद से हमें बहुत लाभ मिला। हमें उम्मीद है कि कृषि ज्ञान पहल से हमारे देश में दूसरी हरित क्रांति की शुरुआत होगी।'' इस पहल से द्विपक्षीय कृषि उत्पादों के व्यापार में भी इजाफा होने की उम्मीद है।

दो-तिहाई भारतीय अपनी आजीविका कृषि के जरिये कमाते हैं। भारत का 22 फीसदी सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी कृषि से ही आता है। ज्ञान पहल के जरिये नवीनतम तकनीकों और प्रौद्योगिकियों के जरिये किसानों के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे।

राष्ट्रपति बुश ने 3 मार्च को हैदराबाद में आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय की यात्रा के समय इन कुछ मुद्दों पर गौर किया। एक किसान लक्ष्मी ने मानवीय श्रम के आधार पर खेती की चुनौतियों के बारे में बताया। राष्ट्रपति ने भी खेतों में कुछ काम करने के लिए अपने हाथ आजमाए। इस मौके पर चेन्नै वाणिज्य दूतावास के एम. कोटेश्वर राव उन्हें देखते रहे (ऊपर बाएं)। राष्ट्रपति बुश ने उन किसानों से बातचीत की जो जमीन की नमी के बारे में जानने, बीज विविधीकरण और कीटों एवं खरपतवार के प्रबंधन के लिए नए तरीके इस्तेमाल कर रहे हैं। एक डेरी उत्पादन प्रदर्शन के दौरान राष्ट्रपति ने मुर्रा भैंसे को थपथपाया। इस मौके पर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई. एस. आर. रेड्डी उनके साथ थे (ऊपर दाएं)। उन्होंने चार साल की वेंकटम्मा को भी गले लगाया जो एक महिला स्वयं सहायता समूह में भागीदार एक महिला की पुत्री थी। कृषि ज्ञान पहल के तहत सहयोग के उदाहरण के बतौर रंगा विश्वविद्यालय पहले ही न्यूयॉर्क के कोर्नेल विश्वविद्यालय के साथ काम कर रहा है। इसके लिए यूएसएड धन मुहैया कराया रहा है और किसानों को विभिन्न नई तकनीकों के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
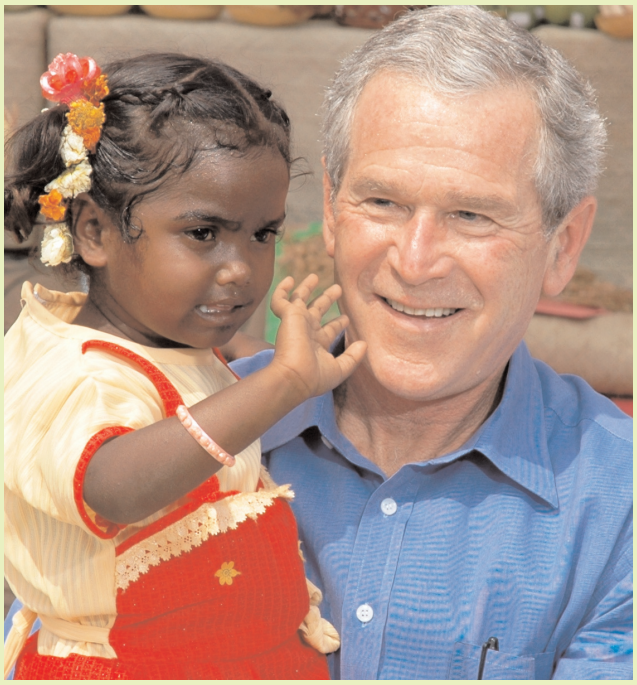
-एल.के.एल.